ए निमूना देखाइया, करने पेहेचान तुम।
पेहेले चीन्हो आप को, पीछे हादी और खसम।। १०३ ।।

यह झूठा नमूना तुमको दिखाया है ताकि तुम पहले अपने को श्री श्यामाजी की और फिर अपने धनी की पहचान कर सको।

ए खावंद सिर अपने, आपन इन के अंग।
अर्स वतन अपना, कायम हमेसा संग।। १०४ ।।

यह पारब्रह्म ही हमारे धनी हैं और हम इनकी अंगना हैं। अपना घर परमधाम है। जहां हम हमेशा धनी के साथ रहते हैं।

कायम जिमी अर्स की, साहेबी पूरन कमाल।
तो कैसा निमूना इनका, जिन सिर नूर जमाल।। १०५ ।।

परमधाम की जिमी (जमीन) अखण्ड है, जहां के तुम पूर्ण रूप से मालिक हो। ऐसे मोमिन जिनके मालिक पारब्रह्म हों उनका नमूना खेल में कहां मिलेगा?

इत निमूना तो कहिए, जो कोई छोटा होवे और।
कायम जिमी में दूसरा, काहूं न पाइए ठौर।। १०६ ।।

परमधाम में यदि कोई छोटा हो तो इसका नमूना दिया जाए। उस अखण्ड परमधाम में पारब्रह्म के सिवाय कोई और है ही नहीं।

ना निमूना नूर का, ना निमूना बका वतन।
ना निमूना हक का, ना निमूना हादी रूहन।। १०७ ।।

न अक्षर ब्रह्म का, न अखण्ड परमधाम का, न पारब्रह्म का और न श्यामा महारानी (रूह अल्लाह) का और न रूहों का कोई नमूना है जिससे तुलना कर पहचान कराई जाए।

महामत कहे ए मोमिनों, तुम हो बका के।
हक अर्स किया जाहेर, सो सब तुमारे वास्ते।। १०८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! तुम अखण्ड परमधाम के हो और अब तुम्हारे वास्ते ही अखण्ड परमधाम और पारब्रह्म की पहचान बताई है।

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ९२७ ।।

अर्स अजीम की हक मारफत-महाकारन

कहूं अर्स अरवाहों को, रूह अल्ला के इलम।
जासों पाइए हकीकत हक की, मुझे हुआ ज्यों हुकम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे अर्श की अरवाहो! श्री श्यामाजी महारानी के जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से कहती हूं। मुझे जिस तरह से हुकम हुआ है उस तरह से हक की हकीकत कहती हूं, ताकि तुम्हें हक की पहचान हो जाए।

और कहूं मैं अर्स की, ज्यों खबर उमत को होए।
सब विध कहूं कायम की, ज्यों समझे सब कोए।। २ ।।

अब पहले मैं परमधाम की बात कहती हूं जिससे मोमिनों को जानकारी मिल जाए कि मैं सारी अखण्ड हकीकत का बयान करूंगी, जिससे सभी कोई आसानी से समझ सकें।

Nijanand App

हक जात जाहेर करूं, और जाहेर हादी उमत।
नूर मकान जाहेर करूं, ए ऐकै जात सिफत।। ३ ।।

मैं हक की जात श्यामा महारानी और ब्रह्मसृष्टि का वर्णन करती हूं और उसके बाद अक्षर ब्रह्म का वर्णन करूंगी। जिसकी सिफत भी एक सी है। वह भी पारब्रह्म के ही अंग हैं।

महंमद नूर हक का, रूहें महंमद का नूर।
ए हमेसा बका मिने, ए एकै जात जहूर।। ४ ।।

श्यामा महारानी पारब्रह्म के अंग हैं और रूहें श्री श्यामा महारानी के अंग हैं। यह हमेशा ही अखण्ड घर (परमधाम) में एक ही स्वरूप हैं, ऐसा जानना।

ए जो सदरतुल-मुंतहा, ए है कायम अर्स।
ए जात सिफात एकै, ए हैं अरस- परस।। ५ ।।

यह जो अक्षरधाम है, यह भी अखण्ड घर है और यह एक ही पारब्रह्म के अंग हैं। यह दोनों एक ही स्वरूप हैं और दोनों धाम भी एक जैसे हैं।

नूर महंमद रूहें हक की, ए हैं एकै जात।
और बाग जोए हौज कौसर, ए साहेबी अर्स सिफात।। ६ ।।

अक्षर ब्रह्म, ब्रह्मसृष्टियां, श्यामाजी और पारब्रह्म सभी एक अक्षरातीत की जात हैं। परमधाम के बाग, हौज कौसर और जमुनाजी सब उस परमधाम की शोभा हैं।

पार ना अर्स जिमी का, ना बागों का पार।
पार ना पसु पंखियन को, ना कछू खेल सुमार।। ७ ।।

परमधाम के जमीन, बगीचे, पशु, पक्षी तथा उनके खेल सब बेशुमार हैं।

पार न बुध बल को, पार ना खूबी खुसबोए।
पार ना इस्क आराम को, नूर पार ना इत कोए।। ८ ।।

इनकी बुद्धि, शक्ति, खूबियां, सुगन्धि, इश्क के सुख और आराम बेशुमार हैं। अक्षर धाम के आगे दूसरा और कुछ वहां नहीं है (परमधाम के सिवाय)।

एक पात बिरिख को ना गिरे, ना खिरे पंखी का पर।
ना होए नया कछू अर्स में, जंगल या जानवर।। ९ ।।

यहां पर वृक्ष का एक भी पत्ता नहीं गिरता। पक्षी का पर (पंख भी) नहीं गिरता। यहां जंगल या जानवर कुछ भी नया नहीं होता।

अब कहूं बेवरा खेल का, हुआ जिन कारन।
सो वास्ता कहूं इन भांत सों, ज्यों होए सबे रोसन।। १० ।।

अब खेल की हकीकत बताती हूं जिनके वास्ते यह बना है। उस बनने के कारण को बताती हूं जिससे सबको पता चल जाए।

नूर मकान जो हक का, जित होत है हुकम।
होए पल में पैदा फना, ऐसे लाख इंड आलम।। ११ ।।

श्री राजजी महाराज का जो अक्षरधाम है वहां उनका हुकम चलता है और उस हुकम से एक पल में लाखों ब्रह्माण्ड बनकर नष्ट हो जाते हैं।

Nijanand App

अर्स खावंद है एकला, आपै हक जात।
बिना कुदरत कादर की, क्यों पाइए सिफात।। १२ ।।

परमधाम का मालिक पारब्रह्म एक है और अपनी जात सब कुछ जो वहां है वह स्वयं पारब्रह्म ही है। अब अक्षर की कुदरत (योगमाया) की शक्ति जाने बिना पारब्रह्म को कैसे समझा जाए?

इत हमेसा होत है, इन कादर की कुदरत।
ए खेल इन खावंद के, देखो नूर सिफत।। १३ ।।

यहां अक्षरधाम में अक्षर ब्रह्म के हुकम से खेल बनता है। ऐसी सिफत इस पारब्रह्म की है।

खेल में कई मुद्दत, होत है दुनियां को।
कई कोट होत पैदा फना, नूर के निमखमों।। १४ ।।

दुनियां के इस खेल में कई मुद्दतें (युग) बीत जाते हैं और अक्षर के एक पल में कई दुनियां बनकर मिट जाती हैं।

जब कछू पैदा न हुआ, जिमी या आसमान।
सो हुकम तब ना हुआ, जिनथें उपजी जहान।। १५ ।।

जब यहां सृष्टि में जमीन आसमान कुछ भी बना नहीं था, तब पारब्रह्म का कुछ हुकम नहीं हुआ था जिससे दुनियां बनी है।

अब सुनो इन खेल की, रूहें उतरी जिन वास्ते।
फुरमान ल्याया रसूल, और उतरे फरिस्ते।। १६ ।।

अब इस खेल की हकीकत को सुनो जिसमें रूहें खेल देखने आई हैं। इनके वास्ते और ईश्वरीसृष्टि के वास्ते रसूल साहब कुरान लेकर आए हैं।

ए बीच ला मकान के, खेल जिमी आसमान।
चौदे तबक भई दुनियां, आखिर फना निदान।। १७ ।।

जमीन और आसमान का यह सारा खेल निराकार के बीच लटक रहा है। चौदह लोकों की दुनियां इसी निराकार के बीच है जो आखिर को नष्ट हो जाएगी।

ए खेल हुआ महंमद वास्ते, और अर्स उमत।
आखिर जाहेर होए के, खोलसी हकीकत।। १८ ।।

यह खेल श्यामा महारानी, ब्रह्मसृष्टियों और अक्षरब्रह्म के वास्ते बनाया गया है जो आखिर वक्त में प्रगट होकर सारी हकीकत बताएंगे।

अर्स उमत होसी जाहेर, और जाहेर हक जात।
करसी दुनियां कायम, ए महमंद की सिफात।। १९ ।।

परमधाम की ब्रह्मसृष्टियां और श्यामा महारानी जाहिर होंगी और मुहम्मद की सिफारिश से दुनियां को अखण्ड मुक्ति प्रदान करेंगी।

रूह अल्ला उतरे अर्स से, होए काजी लेसी हिसाब।
दे दीदार करसी कायम, यों कहे महंमद किताब।। २० ।।

श्यामा महारानी परमधाम से उतरकर न्यायाधीश बनकर दुनियां का हिसाब लेंगी और आखिरत में सबको दर्शन देकर बहिश्तों में कायम करेंगी, ऐसा कुरान में लिखा है।

Nijanand App

महंमद मेंहेदी आवसी, करसी इमामत।
बका पर सिजदा गिरोह को, करावसी आखिरत।। २१ ।।

इन सबके बीच में इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी प्रगट होंगे और अखण्ड परमधाम पर सब दुनियां वालों को सिजदा करवाएंगे।

सब कहें किताबें हक के, खेल हुआ हुकमें।
किस वास्ते हुकम किया, ए ना कह्या किनने।। २२ ।।

सभी धर्मग्रन्थ कहते हैं कि पारब्रह्म के हुकम से ही यह खेल बना है, पर यह हुकम किसके वास्ते हुआ, यह किसी ने नहीं बताया।

अब देखो दुनियां जाहेरी, करम कांड सरीयत।
इनके इस्क ईमान की, कहूं सो हकीकत।। २३ ।।

अब दुनियां को जाहिरी रूप से देखो जो कर्मकाण्ड और शरीयत में चल रही है। इनके इश्क और ईमान की हकीकत बताती हूं।

दुनी कहे हक को, वजूद नहीं मुतलक।
तो ए हुकम किनने किया, जो सूरत नाहीं हक।। २४ ।।

दुनियां पारब्रह्म को बिल्कुल निराकार कहती है। यदि पारब्रह्म का स्वरूप नहीं है, तो यह हुकम करने वाला कौन है?

न ठौर ठेहेरावें अर्स को, ना हक की सूरत।
हुकम सूरत बिना क्यों होए, और हुकम रखे साबित।। २५ ।।

इस दुनियां वाले पारब्रह्म का परमधाम कहां है, नहीं मानते। पारब्रह्म का स्वरूप नहीं मानते। यदि पारब्रह्म का स्वरूप नहीं होगा तो हुकम कौन करेगा? जिस हुकम का होना तो मानते हैं।

हक वजूद महंमद कहे, नूर पार तजल्ला नूर।
रद-बदल वास्ते उमत, पोहोंच के करो हजूर।। २६ ।।

मुहम्मद साहब कहते हैं कि जो पारब्रह्म का स्वरूप है, वह अक्षरधाम के पार अक्षरातीत धाम में है। जहां पहुंचकर ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते आमने-सामने बातें कीं।

हकें हुकम यों किया, कहे हरफ नब्बे हजार।
तीस जाहेर कीजियो, तीस तुम पर अखत्यार।। २७ ।।

पारब्रह्म ने रसूल साहब को नब्बे हजार हरफ कहे और इस तरह से हुकम किया कि तीस हजार शब्द जाहिर करना तथा दूसरे तीस का तुमको अख्तियार है चाहो तो जाहिर कर सकते हो।

और तीस गुझ रखो, वे आखिर पर मुद्दार।
सो हम आए के खोलसी, अर्स बका के द्वार।। २८ ।।

बाकी बचे तीस हजार को छिपाकर रखो। यह अन्तिम समय में मैं आकर जाहिर करूंगा और अखण्ड परमधाम के दरवाजे खोलूंगा।

सो साहेब आखिर आवसी, किया महंमद सों कौल।
भिस्त दरवाजे कायम, सब को देसी खोल।। २९ ।।

मुहम्मद साहब से खुदा ने वायदा किया कि आखिर में मैं आऊंगा और मारफत के तीस हजार हरफ खोलूंगा और सबको बहिश्तों में कायमी दूंगा।

Nijanand App

काजी होए के बैठसी, होसी सबों दीदार।
तो भी ईमान न दुनी को, जो एती करी पुकार।। ३० ।।

जब स्वयं इमाम मेंहदी सबके न्यायाधीश बनकर बैठेंगे तो सबको दर्शन होगा। इतनी पुकार करने पर भी दुनियां को उन पर ईमान नहीं आता।

ऐसा ईमान इन दुनी का, कहे महंमद को बरहक।
और महंमद के फुरमाए में, फेर तिन में ल्यावें सक।। ३१ ।।

दुनियां वालों का ऐसा ईमान है कि मुहम्मद को तो सच्चा कहते हैं, परन्तु मुहम्मद की बताई बातों में संशय रखते हैं।

महंमद बातें हकसों, पोहोंच के करी हजूर।
दुनी न माने हक सूरत, जासों एती भई मजकूर।। ३२ ।।

मुहम्मद ने पारब्रह्म से आमने-सामने बातें कीं। जिस खुदा से इतनी बातें हुईं उस पारब्रह्म के स्वरूप को दुनियां वाले नहीं मानते।

और कहूं लैलत कदर की, जो कहे तकरार तीन।
हादी हुकमें रूहें फरिस्ते, बीच नाजल इसलाम दीन।। ३३ ।।

अब लैल तुल कदर की रात का बयान करती हूं जिसके तीन भाग हुए। श्री राजजी महाराज के हुकम से श्यामा महारानी ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरीसृष्टि खेल देखने के वास्ते निजानन्द सम्प्रदाय में आए हैं।

और आगे नूह तोफान के, बीच लैलत कदर।
गिरो उतरी अर्स से, जो चढ़ी किस्ती पर।। ३४ ।।

लैल तुल कदर की रात्रि में नूह-तूफान के बाद, अर्थात् रास लीला के बाद वही रूहें इस खेल में उतरीं।

दो तकरार पेहेले कहे, जो गुजरे मांहें लैल।
तोफान पीछे ए तीसरा, जो भया फजर का खेल।। ३५ ।।

लैल तुल कदर में दो बार पहले बृज में और फिर रास में लीला हुई। इन दोनों के बाद यह तीसरा जागनी का ब्रह्माण्ड है। जिसमें तारतम वाणी से सवेरा होने पर पहचान कर खेल देख रहे हैं।

दसमी लग रोज रब का, सो दुनी के साल हजार।
कह्या बेहेतर महीने हजार से, लैल तीसरा तकरार।। ३६ ।।

रसूल साहब के जाने के बाद दसवीं सदी तक दुनियां के हजार साल और पारब्रह्म का दिन एक है। रात्रि का तीसरा भाग हजार महीने से अधिक साल का लिखा है।

महंमद मेंहेदी ईसा नाजल, असराफील जबराईल।
रूहें फरिस्ते ऊपर, हकें भेजे एह वकील।। ३७ ।।

इस रात्रि के तीसरे भाग में ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि के वास्ते पारब्रह्म ने इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी, ईसा रूह अल्लाह (श्यामा महारानी देवचन्द्रजी) असराफील (जागृत बुद्धि का फरिश्ता) और जबराईल (जोश का फरिश्ता) इन सबको भेजा है।

Nijanand App

रहे साल चौरासी लैल में, तिन ऊपर हुई फजर।
अग्यारैं सदी मिने, मेरी बातून खुली नजर।। ३८ ।।

इस ब्रह्माण्ड में आने के बाद (अर्थात् सम्वत् १६३८ से १७२२ तक) चौरासी साल तक अंधेरे में रहे। जब जयराम भाई के घर दीप बन्दर में पहुंचकर जागनी का काम शुरू किया तो ज्ञान का सवेरा हुआ। इस तरह से ग्यारहवीं सदी में मेरी बातूनी दृष्टि खुल गई।

चौदे तबकों न पाइया, अर्स हक का कित।
सो नजीक देखाए सेहेरग से, इलम ईसा के इत।। ३९ ।।

चौदह लोकों में कोई जानकारी देने वाला नहीं था कि परमधाम कहां है। धनी श्री देवचन्द्रजी के तारतम वाणी से वह परमधाम सेहेरग से (प्राण की नली से) नजदीक लगने लगा।

अर्स ना चौदे तबक में, सो लिए इलम ईसा के।
नजीक देखाया सेहेरग से, बीच अर्स बैठाए ले।। ४० ।।

ईसा रूह अल्लाह श्यामा महारानी के तारतम ज्ञान से यह निश्चय हो गया कि वह अखण्ड घर (परमधाम) चौदह लोकों में नहीं है और वह सेहेरग से नजदीक है। यह पहचान हुई कि मैं परमधाम में बैठी हूं।

और मेहेर करी मोहे रूहअल्ला, दिया खुदाई इलम।
तूं रूह है अर्स अजीम की, तुझ को दिया हुकम।। ४१ ।।

श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी ने खुदाई इलम (तारतम ज्ञान) देकर मेरे ऊपर कृपा की और कहा कि तुम परमधाम की हो और मैं तुमको हुकम देता हूं।

गिरो आई लैल के खेल में, सो तुमें मिलसी आए।
दिल साफ इनों के करके, अर्स में लीजे उठाए।। ४२ ।।

बारह हजार ब्रह्मसृष्टियां खेल में आई हैं। वह तुम्हें आकर मिलेंगी। उनके दिलों के संशय मिटाकर घर ले आओ।

ए बात मैं दिल में लई, तब महंमद हुए मेहेरबान।
हकीकत मारफत के, पट खोल दिए फुरमान।। ४३ ।।

इस बात को मैंने दृढ़ कर लिया। उसके बाद रसूल साहब की मेहरबानी हुई और कुरान से परमधाम की हकीकत का पता चला।

सब सुध भई अर्स की, हुई हक सों निसबत।
गिरो मिली मोहे वतनी, ताए देऊं अर्स न्यामत।। ४४ ।।

अब घर की सारी पहचान हो गई। पारब्रह्म की अंगना होने की पहचान हुई। मेरे सुन्दरसाथ मिले। अब उनको अर्श का खजाना देती हूं।

ए सुकन पेहेले लिखे, बीच कतेब वेद।
सो ए करत हों जाहेर, जो दिया दोऊ हादियों भेद।। ४५ ।।

यह वचन वेद और कतेब में पहले से ही लिखे थे। उसको मैं जाहिर करता हूं दोनों हादी (वेद के श्री देवचन्द्रजी ने और कुरान के रसूल साहब) ने छिपे भेदों का रहस्य बताया।

Nijanand App

रूहें बेनियाज थीं, बीच दरगाह बारे हजार।
जाने ना आप अर्स की, साहेबी अपार।।४६ ।।

परमधाम में बारह हजार रूहों (जो द्वेष और इच्छा रहित थीं) उनको अपने घर की साहेबी की खबर नहीं थी।

सुध नाहीं दुख सुख की, ना सुध विरह मिलाप।
ना सुध बुजरक अर्स की, खबर न खावंद आप।।४७ ।।

उन्हें दुःख की, सुख की, बिछुड़ने की, मिलने की, अपनी, धनी की तथा परमधाम की महिमा क्या है, की कुछ भी खबर नहीं थी।

साहेब बंदे की सुध नहीं, छोटा बड़ा क्यों कर।
ना सुध एक ना दोए की, ना सांच झूठ खबर।।४८ ।।

उन्हें धनी तथा रूहें और फरिश्ते बड़े छोटे कैसे हैं, पारब्रह्म एक अद्वैत कैसा है और संसार द्वैत कैसा है, सच कैसा है झूठ क्या है की सुध नहीं थी।

ना सुध दोस्त ना दुस्मन, ना सुध नफा नुकसान।
ना सुध दूर नजीक की, ना सुध कुफर ईमान।।४९ ।।

उनके दोस्त कौन हैं, दुश्मन कौन हैं, नफा किसमें है, नुकसान किसमें है, दूर कौन है, पास कौन है, ईमान वाले कौन हैं, काफिर कौन हैं, की पहचान नहीं थी।

तिस वास्ते खेल देखाइया, ए बात दिल में आन।
झूठ निमूना देखाए के, रूहों होए हक पेहेचान।।५० ।।

पारब्रह्म ने इन बातों का दिल में विचार कर खेल दिखाया जिससे झूठ का नमूना देखकर रूहों को सत की पहचान हो जाए।

सांची साहेबी हक की, कोई नाहीं दूजा और।
झूठ नकल देखे बिना, पावे ना अर्स ठौर।।५१ ।।

पारब्रह्म की साहेबी ही सत्य है और दूसरा कुछ नहीं, परन्तु झूठी नकल को देखे बिना अखण्ड घर के ठिकाने की कदर नहीं होती।

बिना निमूने न पाइए, क्यों है तफावत।
कछू दूजी देखे बिना, पाइए ना हक सिफत।।५२ ।।

बिना नमूने के फर्क पता नहीं चलता। जब तक झूठी माया को न देख लें, तब तक सत्य की पहचान नहीं होती।

यों जान बीच बका मिने, दिल में ल्याए हक।
नूर-जलाल रूहन को, देखें असल इस्क।।५३ ।।

अखण्ड परमधाम के बीच में श्री राजजी महाराज ने दिल में ऐसा विचार किया कि अक्षर ब्रह्म और रूहों को सच्चे इश्क की पहचान करा दें।

और लिया ए दिल में, जो अरवाहें अर्स की।
दूजी बिना जानें नहीं, हक कैसी है साहेबी।।५४ ।।

और दिल में यह विचार किया कि जो परमधाम की रूहें हैं उनको द्वैत संसार का खेल देखे बिना सच्ची साहेबी क्या है, का ज्ञान नहीं होगा।

Nijanand App

जित दूजी कोई है नहीं, एकै साहेब हक।
तो तिन को दूजी बिना, कौन कहे बुजरक।।५५।।

जहां एक सच्चे पारब्रह्म के अलावा कोई दूसरा है ही नहीं, तो दूसरे के बिना उसको बड़ा कौन कहेगा?

असल होए जित अकेला, और होए नाहीं नकल।
सो नकल देखे बिना, क्यों पाइए असल।।५६।।

जहां पर केवल असल हो और नकल न हो, तो नकल को देखे बिना असल की पहचान कैसे होगी?

जित दुख कोई जाने नहीं, होए अकेला सुख।
ए सुख लज्जत तब पाइए, जब देखिए कछू दुख।।५७।।

जहां कोई दुःख को जानता ही नहीं, वहां केवल सुख ही सुख है, वहां सुख की कदर तब होगी जब कुछ दुःख देखें।

सांच होए जित एकै, पाइए ना जिद के छूट।
सांच हक तब पाइए, जब होए निमूना झूठ।।५८।।

जहां केवल सत्य हो और झूठ हो ही नहीं, वहां सच्चे की पहचान झूठे नमूने के बिना कैसे होगी?

दूसरा कोई है नहीं, जित एकै होए।
तो तिन की सुध दूजे बिना, क्यों कर देवे सोए।।५९।।

जहां एक के बिना कोई दूसरा है ही नहीं, तो उस एक की सुध दूसरे के बिना कोई कैसे देगा?

जित साहेब होवे एकला, न साहेदी दूजे बिन।
बिन दिए साहेदी तीसरे, क्यों आवे ईमान तिन।।६०।।

जहां पर पारब्रह्म अकेले हों और गवाही देने के लिए दूसरा कोई न हो, तो तीसरे आदमी को बिना गवाही के ईमान कैसे आएगा?

तो कह्या खुदा एक है, और महंमद कह्या बरहक।
सो न आवे ख्वाबी दम पर, जो लो होए न रूहें बुजरक।।६१।।

इसीलिए कुरान में खुदा एक है और मुहम्मद के वचन सत्य हैं, लिखा है। वह खुदा जब तक उसकी रूहें खेल में नहीं आ जातीं तब तक जीवसृष्टि के वास्ते नहीं आएंगे?

ए खेल हुआ तिन वास्ते, हक के हुकम।
महंमद आया रूहों वास्ते, ले फुरमान खसम।।६२।।

पारब्रह्म के हुकम से ही यह खेल मोमिनों के वास्ते बना है और कुरान लेकर मुहम्मद साहब मोमिनों के वास्ते ही आए हैं।

जो ल्याए फुरमान रसूल, सो अब खोली हकीकत।
अर्स रूहें फरिस्ते, हुई हक की मारफत।।६३।।

रसूल साहब जो कुरान लाए हैं उसकी हकीकत अब खुली। अब घर की, ब्रह्मसृष्टि की, ईश्वरीसृष्टि की तथा पारब्रह्म की पहचान हुई।

Nijanand App

लिख्या था जो अव्वल, सो आए पोहोंची कयामत।
भिस्त दुनी को देय के, हादी ले उठसी उमत।। ६४ ।।

जो पहले से कुरान में लिखा था, वह कयामत का समय आ गया। अब दुनियां को बहिश्तों में अखण्ड करके श्री प्राणनाथजी अपनी अंगनाओं को साथ लेकर अपने घर जाएंगे।

इन बिध कहूं बेवरा, ज्यों रूहें जानें बुजरकी।
देखाए बिना जानें नहीं, हक कैसी है साहेबी।। ६५ ।।

मैंने यह हकीकत इस तरह से लिखी है जिससे ब्रह्मसृष्टियों को पारब्रह्म की साहेबी का पता चल जाए। इस तरह से दिखाए बिना वह अपने आप नहीं समझ सकती थीं।

हकें देखाई अर्स साहेबी, हादी रूहों को यों कर।
दुई देखाई झूठ ख्वाब में, पावने पटंतर।। ६६ ।।

पारब्रह्म ने श्यामाजी महारानी और रूहों को परमधाम की साहेबी इस तरह से दिखा दी। इस संसार के झूठे सपने में द्वैत और अद्वैत भाव के फर्क को दिखा दिया।

चढ़ना है नासूत से, तिन ऊपर है मलकूत।
तिन पर ला-मकान है, तिन पर नूर बका साबूत।। ६७ ।।

मृत्युलोक से चढ़कर बैकुण्ठ, उसके ऊपर निराकार तथा उसके ऊपर अखण्ड अक्षरधाम जाना है।

कोट नासूत की दुनियां, मलकूत को पूजत।
खुदा याही को जानहीं, ए मलकूत साहेबी इत।। ६८ ।।

करोड़ों मृत्युलोकों की दुनियां बैकुण्ठ को पूजती है और उसी को खुदा करके जानती है।

कोट मलकूत के खावंद, ला के तले बसत।
नूर सिफत कर कर गए, पर आगे ना पोहोंचत।। ६९ ।।

ऐसे करोड़ों बैकुण्ठों के मालिक निराकार के नीचे बसते हैं। वह अक्षर की सिफतें तो करते हैं पर निराकार के आगे नहीं जा सकते।

वेदें नाम धरे खेल के, पूत बंझा सींग ससक।
आकास फूल इनको कह्या, एक जरा न रखी रंचक।। ७० ।।

वेदों में खेल को बंझा पूत (वंध्या-पुत्र), खरगोश (शशक) के सिर पर सींग, आकाश के फूल के समान कहा है, जो कभी होते ही नहीं, अर्थात् निराकार कहा है।

कतेब कहे तले ला के, सो खेल है सब ला।
ए कुंन केहेते हो गया, सो कयामत को फना।। ७१ ।।

कतेब कहता है कि (ला, हवा) निराकार के नीचे सब मिट जाने वाला है। जो संसार कुंन कहने से बन गया है, वह कयामत के दिन नष्ट हो जाएगा।

जो जाने खेल को साहेबी, सो खेलै के कबूतर।
इन की सहूर सुरिया लग, सो हकें पोहोंचें क्यों कर।। ७२ ।।

जैसे खेल के कबूतर बाजीगर को नहीं जानते, उसी तरह से जीवसृष्टि पारब्रह्म को नहीं जानती। इनका ध्यान सुरिया सितारा (ज्योति स्वरूप) तक ही जाता है। तो यह पारब्रह्म को कैसे पहचानें?

Nijanand App

कहे कबूतर खेल के, खेल सरीक हक का।
हक हमेसा वेद कतेब में, खेल तीनों काल फना।।७३ ।।

खेल के कबूतरों के समान ही पारब्रह्म का यह संसार खेल है। पारब्रह्म हमेशा अखण्ड है। वेद कतेब में खेल को तीन काल (भूत, वर्तमान और भविष्य) में नाशवान बताया है।

एक साहेबी नूर हक की, और खेल कछुए नाहें।
न सरीक न निमूना, ए लिख्या वेद कतेबों मांहें।।७४ ।।

वेद-कतेबों में लिखा है कि पारब्रह्म के नूर की साहेबी सत्य है और यह खेल कुछ भी नहीं है। न कोई नमूना देने योग्य वस्तु है जिससे उसकी उपमा दी जाए।

खेल तो झूठा फना कह्या, साहेब हमेसा हक।
जैसा साहेब बुजरक, खेल भी तिन माफक।।७५ ।।

खेल को नाशवान कहा है। पारब्रह्म अखण्ड है। जैसे पारब्रह्म महान हैं उनका खेल भी उसी तरह बड़ा है।

झूठ निमूना हक को दीजिए, ए कैसी निसबत।
ए झूठ खेल देखाइया, लेने हक लज्जत।।७६ ।।

झूठे की उपमा सत को कैसे दी जाए और कैसे उनके सम्बन्ध की पहचान की जाए? श्री राजजी महाराज ने सत्य की लज्जत देने के वास्ते ही यह झूठा खेल दिखाया है।

कोट इंड पैदा फना, होवें नूर के एक पल।
ऐसी नूर जलाल की, कुदरत रखे बल।।७७ ।।

अक्षर के एक पल में करोड़ों ब्रह्माण्ड पैदा होते हैं। इतनी ताकत अक्षर ब्रह्म की कुदरत (मूल प्रकृति) में है।

तिन से कायम होत है, सदरतुलमुंतहा जित।
होए नाहीं इन जुबां, नूर मकान सिफत।।७८ ।।

सदरतुलमुंतहा (अक्षरधाम) जो अखण्ड है, उसकी सिफत इस झूठी जबान के कहने में नहीं आती।

सदरतुलमुंतहा थें, आवत नूर-जलाल।
जित है अर्स अजीम, खावंद नूर जमाल।।७९ ।।

अक्षरधाम से अक्षर ब्रह्म परमधाम में नूरजमाल (अक्षरातीत) के दर्शन को आते हैं।

सो नूर नूरतजल्ला के, दायम आवे दीदार।
इन दरगाह में उमत, रूहें बारे हजार।।८० ।।

अक्षर ब्रह्म पारब्रह्म के दर्शन को रोज ही आते हैं। इस पवित्र घर में बारह हजार रूहें रहती हैं।

एह मरातबा रूहन का, जिन का हादी अहमद।
मीम गांठ जब खुली, तब सोई हक अहद।।८१ ।।

इन रूहों की ऐसी साहेबी है। जिनके हादी श्यामा महारानी हैं। मीम की गांठ खुलेगी, तब 'यह एक पारब्रह्म है' यह जाहिर हो जाएगा, अर्थात् जब श्री प्राणनाथजी जाहिर हो जाएंगे तो सब धर्मों के रहस्य खुल जाएंगे।

Nijanand App

महामत कहे ए मोमिनों, देखो खसम प्यार।
ईसा महंमद अंदर आए के, खोल दिए सब द्वार।। ८२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! अपने धनी के प्यार को देखो कि रसूल मुहम्मद और श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी को मेरे अन्दर बिठाकर सब धर्मग्रन्थों के छिपे भेदों के रहस्य खोल दिए।

॥ प्रकरण ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ १००९ ॥

अब तुम निकसो नींद से, आए पोहोंची सरत।
कौल किया था हक ने, सो आई कयामत।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हे सुन्दरसाथजी! श्री राजजी महाराज ने जो कयामत के समय आने का वायदा किया था वह समय आ गया है। अब तुम खेल से बाहर निकलो।

जबराईल हक हुकमें, ल्याया नामें वसीयत।
फुरमान फकीरों सफकत, ले आवे दुनी बरकत।। २ ।।

पारब्रह्म के हुकम से जबराईल फरिश्ता मक्का मदीना से वसीयतनामा लाए हैं जिनमें कुरान, पीरों की शफकत (कृपा) और दुनियां की बरकत मक्का से उठकर हिन्दुस्तान में आ गई है, का लेख है।

द्वार तोबा के बंद होएसी, अग्यारैं सदी आखिर।
जो होवे अरवा अर्स की, सो नींद करे क्यों कर।। ३ ।।

ग्यारहवीं सदी के अन्त में तोबा के दरवाजे बन्द हो जाएंगे (वाणी उतरनी बन्द हो जाएगी)। परमधाम की जो ब्रह्मसृष्टियां हैं वह अब कैसे सोती रहेंगी?

आए लैल के खेल में, लेने अर्स लज्जत।
सुख सांचे झूठे दुख में, लेने को एह बखत।। ४ ।।

रात्रि में खेल देखने के वास्ते आए थे ताकि परमधाम के सुखों की लज्जत मिल सके। परमधाम के सच्चे सुख को संसार के झूठे दुःख में बैठकर लेने का यह मौका है।

अपन बैठे बीच अर्स के, अर्स को नाहीं सुमार।
दसों दिस मन दौड़ाइए, काहूं न आवे पार।। ५ ।।

हम अखण्ड घर (परमधाम) में बैठे हैं। जो बेशुमार सुख देने वाला है। इसी दिशा से मन में विचार करके देखो तो उन सुखों की कोई सीमा नहीं है।

खसमें ख्वाब देखाइया, बीच अर्स अपने इत।
हक हादी रूहें मिलाए के, उड़ाए दई गफलत।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज ने हमको घर में ही बिठाकर सपने का खेल दिखाया है और अब श्री राजजी महाराज ने श्यामा महारानी और रूहों को मिलाकर सब संशय दूर कर दिए हैं।

ए खेल तो जरा है नहीं, सब है अर्स खसम।
बैठे इतहीं जागिए, उठो अर्स में तुम।। ७ ।।

यह खेल तो कुछ नहीं है, मिटने वाला है। अखण्ड तो श्री राजजी महाराज का परमधाम ही है। जब यहां जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से जाग जाएंगे, तो तुम्हारे मूल तन परमधाम में उठ बैठेंगे।

Nijanand App